॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

https://pdf.astrologyapi.com/v1/basic_horoscope_pdf
12/06/2025 01:03 PM
Ujjain, Madhya Pradesh

निर्मित

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	12/06/2025
जन्म समय	13:03
जन्म स्थान	Ujjain, Madhya Pradesh
अक्षांश	23 N 10
देशांतर	75 E 47
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	24:12:45
सूर्योदय	5:40:26
सूर्यास्त	19:13:3

घात चक्र

महीना	भाद्रपद
तिथि	5,10,15
दिन	शनिवार
नक्षत्र	श्रावण
योग	शुक्ल
करण	कौलव
प्रहर	1
चंद्र	8

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण प्रतिपदा
योग	शुभ
नक्षत्र	मूल
करण	कौलव

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
योनि	स्वान
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
जन्म राशि	धनु
राशि स्वामी	गुरु
नक्षत्र	मूल
नक्षत्र स्वामी	केतु
चरण	3
युञ्जा	प्रभाग
तत्त्व	अग्नि
नामाक्षर	भ
पाया	ताम्र
लग्न	कन्या
लग्न स्वामी	बुध

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	वृष	27:23:08	शुक्र	मृगशिरा	मंगल	9
चन्द्र	--	धनु	08:42:18	गुरु	मूल	केतु	4
मंगल	--	सिंह	02:59:04	सूर्य	मघा	केतु	12
बुध	--	मिथुन	12:23:53	बुध	आर्द्रा	राहु	10
गुरु	--	मिथुन	06:20:25	बुध	मृगशिरा	मंगल	10
शुक्र	--	मेष	11:57:22	मंगल	अश्विनी	केतु	8
शनि	--	मीन	06:55:58	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	7
राहु	हाँ	कुम्भ	28:41:22	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	6
केतु	हाँ	सिंह	28:41:22	सूर्य	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	12
लग्न	--	कन्या	05:43:01	बुध	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	1

सूर्य
वृष
मृगशिरा
सम

चन्द्र
धनु
मूल
हानिप्रद

मंगल
सिंह
मघा
हानिप्रद

बुध
मिथुन
आर्द्रा
सम

गुरु
मिथुन
मृगशिरा
हानिप्रद

शुक्र
मेष
अश्विनी
योगकारक

शनि
मीन
उत्तर भाद्रपद
सम

राहु
कुम्भ
पूर्व भाद्रपद
--

केतु
सिंह
उत्तर फाल्गुनी
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

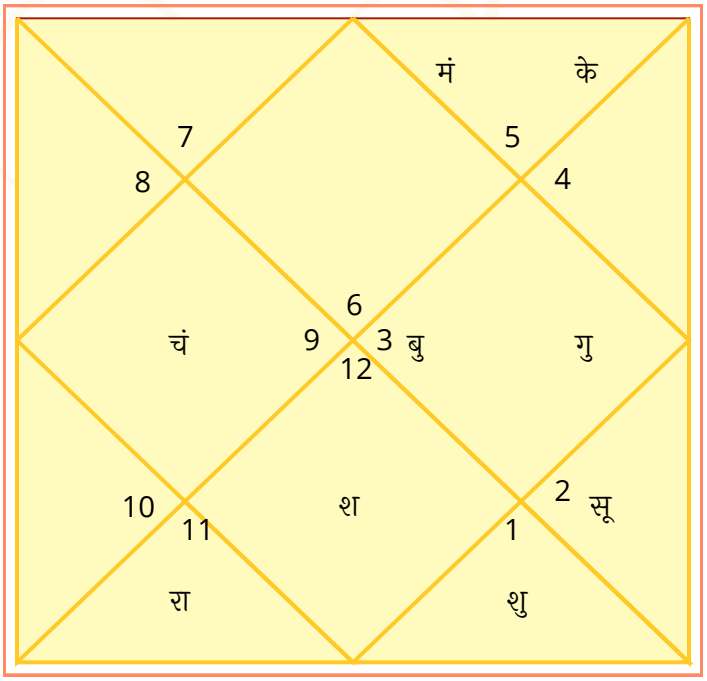

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

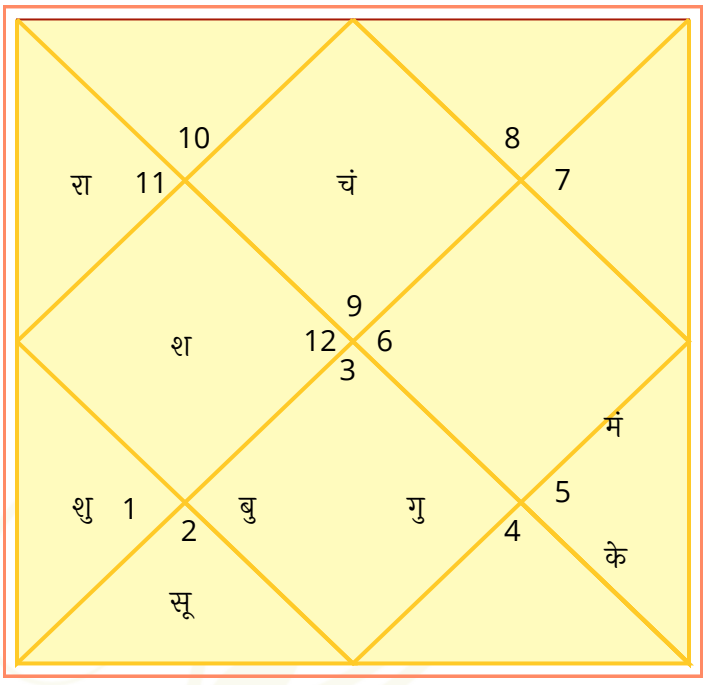

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

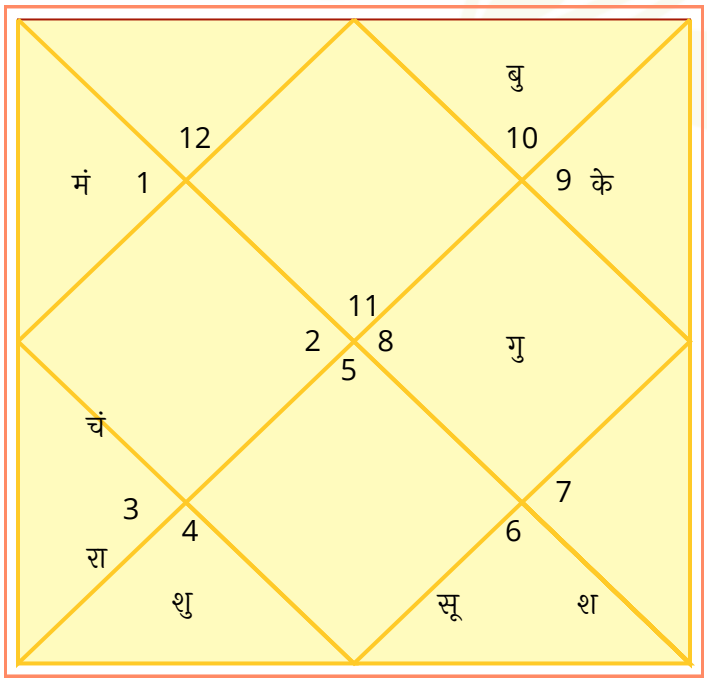

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

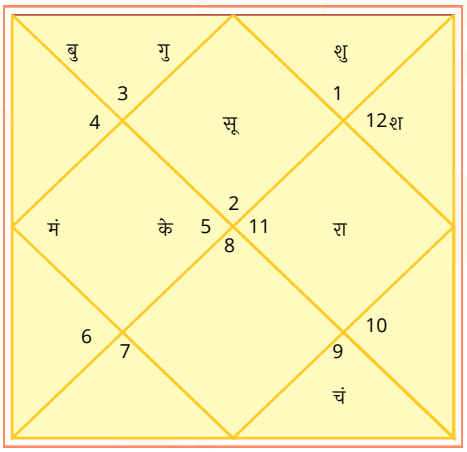

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

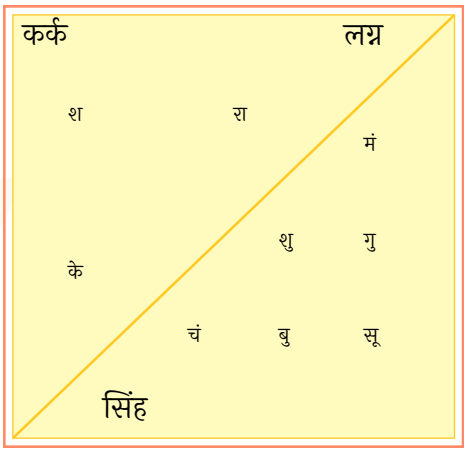

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

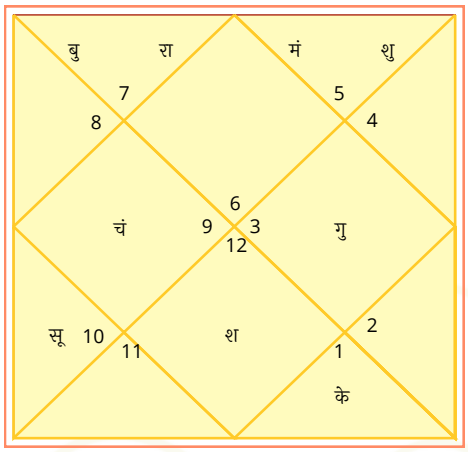

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

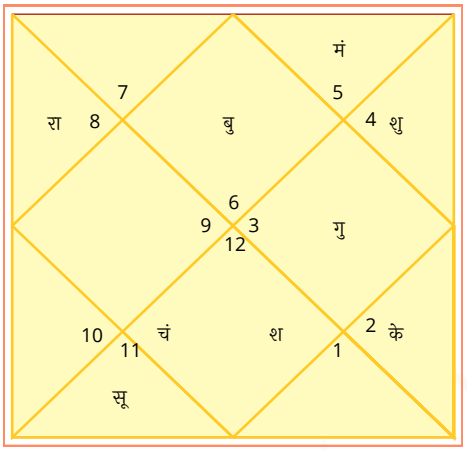

भाग्य

पंचमांश कुंडली

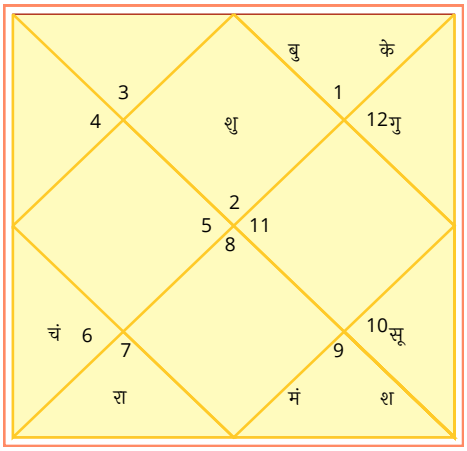

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

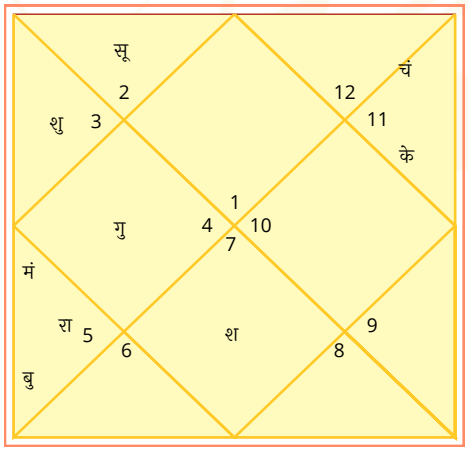

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

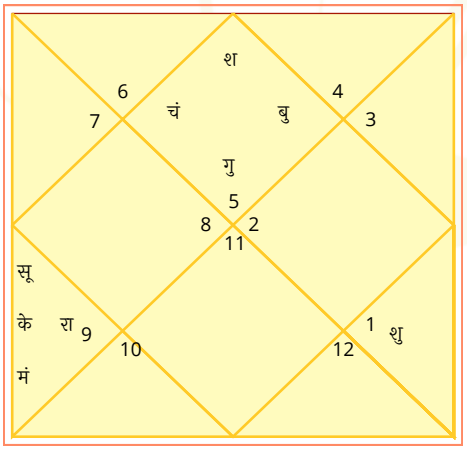

आयु

दशमांश कुंडली

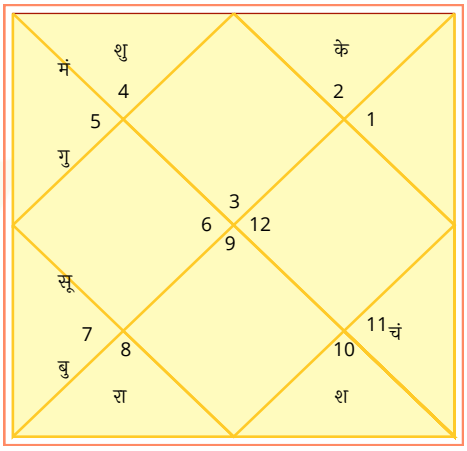

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

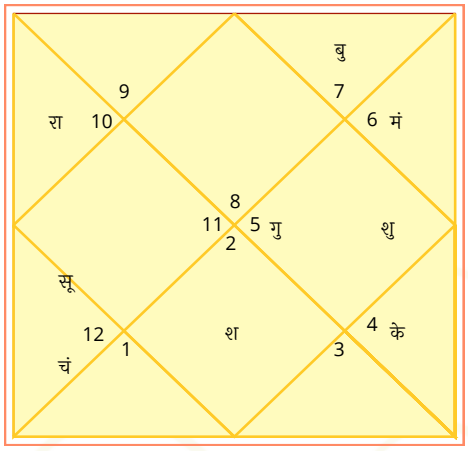

माता-पिता, पैतृक सुख

भाव सन्धि

लग्न - 05:43:01 दशम भाव मध्य - 05:43:01

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	कन्या	05:43:01	कन्या	20:43:01
2	तुला	05:43:01	तुला	20:43:01
3	वृश्चिक	05:43:01	वृश्चिक	20:43:01
4	धनु	05:43:01	धनु	20:43:01
5	मकर	05:43:01	मकर	20:43:01
6	कुम्भ	05:43:01	कुम्भ	20:43:01
7	मीन	05:43:01	मीन	20:43:01
8	मेष	05:43:01	मेष	20:43:01
9	वृष	05:43:01	वृष	20:43:01
10	मिथुन	05:43:01	मिथुन	20:43:01
11	कर्क	05:43:01	कर्क	20:43:01
12	सिंह	05:43:01	सिंह	20:43:01

चलित कुंडली

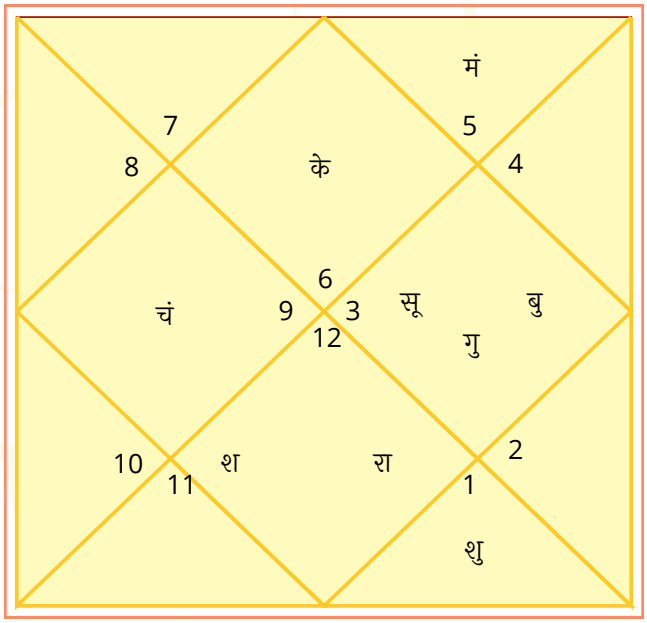

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

विम्शोत्तरी दशा - I

केतु

16-11-2020 06:28
17-11-2027 00:28

केतु	14-04-2021 09:55
शुक्र	14-06-2022 12:55
सूर्य	20-10-2022 09:01
चन्द्र	21-05-2023 10:31
मंगल	17-10-2023 13:58
राहु	04-11-2024 02:16
गुरु	10-10-2025 23:52
शनि	19-11-2026 19:31
बुध	17-11-2027 00:28

शुक्र

17-11-2027 00:28
17-11-2047 00:28

शुक्र	18-03-2031 12:28
सूर्य	17-03-2032 18:28
चन्द्र	16-11-2033 12:28
मंगल	16-01-2035 15:28
राहु	16-01-2038 09:28
गुरु	16-09-2040 09:28
शनि	17-11-2043 00:28
बुध	16-09-2046 21:28
केतु	17-11-2047 00:28

सूर्य

17-11-2047 00:28
16-11-2053 12:28

सूर्य	05-03-2048 14:16
चन्द्र	04-09-2048 05:16
मंगल	10-01-2049 01:22
राहु	04-12-2049 18:46
गुरु	22-09-2050 23:34
शनि	04-09-2051 23:16
बुध	11-07-2052 10:22
केतु	16-11-2052 06:28
शुक्र	16-11-2053 12:28

चन्द्र

16-11-2053 12:28
17-11-2063 00:28

चन्द्र	16-09-2054 21:28
मंगल	17-04-2055 22:58
राहु	16-10-2056 19:58
गुरु	15-02-2058 19:58
शनि	17-09-2059 03:28
बुध	15-02-2061 13:58
केतु	16-09-2061 15:28
शुक्र	18-05-2063 09:28
सूर्य	17-11-2063 00:28

मंगल

17-11-2063 00:28
16-11-2070 18:28

मंगल	14-04-2064 03:55
राहु	02-05-2065 16:13
गुरु	08-04-2066 13:49
शनि	18-05-2067 09:28
बुध	14-05-2068 14:25
केतु	10-10-2068 17:52
शुक्र	10-12-2069 20:52
सूर्य	17-04-2070 16:58
चन्द्र	16-11-2070 18:28

राहु

16-11-2070 18:28
16-11-2088 06:28

राहु	29-07-2073 22:40
गुरु	23-12-2075 13:04
शनि	29-10-2078 12:10
बुध	17-05-2081 21:28
केतु	05-06-2082 09:46
शुक्र	05-06-2085 03:46
सूर्य	29-04-2086 21:10
चन्द्र	29-10-2087 18:10
मंगल	16-11-2088 06:28

विम्शोत्तरी दशा - II

गुरु		शनि		बुध	
16-11-2088 06:28		17-11-2104 06:28		18-11-2123 00:28	
17-11-2104 06:28		18-11-2123 00:28		17-11-2140 06:28	
गुरु	04-01-2091 11:16	शनि	21-11-2107 01:31	बुध	15-04-2126 15:55
शनि	17-07-2093 18:28	बुध	31-07-2110 04:40	केतु	12-04-2127 20:52
बुध	23-10-2095 16:04	केतु	09-09-2111 00:19	शुक्र	10-02-2130 17:52
केतु	28-09-2096 13:40	शुक्र	08-11-2114 15:19	सूर्य	18-12-2130 04:58
शुक्र	30-05-2099 13:40	सूर्य	21-10-2115 15:01	चन्द्र	18-05-2132 15:28
सूर्य	18-03-2100 18:28	चन्द्र	21-05-2117 22:31	मंगल	15-05-2133 20:25
चन्द्र	18-07-2101 18:28	मंगल	30-06-2118 18:10	राहु	03-12-2135 05:43
मंगल	24-06-2102 16:04	राहु	06-05-2121 17:16	गुरु	10-03-2138 03:19
राहु	17-11-2104 06:28	गुरु	18-11-2123 00:28	शनि	17-11-2140 06:28

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	केतु	16-11-2020 06:28	17-11-2027 00:28
अंतर्दशा	गुरु	04-11-2024 02:16	10-10-2025 23:52
प्रत्यंतर दशा	चन्द्र	03-07-2025 13:34	31-07-2025 23:22
सूक्ष्म दशा	राहु	07-07-2025 14:09	11-07-2025 20:26

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

योगिनी दशा - I

उल्का (6 वर्ष)

12-7-2021 12:39
12-7-2027 12:39

उल्का	12-7-2022 18:39
सिद्धि	11-9-2023 21:39
संकटा	10-1-2025 21:39
मंगला	12-3-2025 18:39
पिंगला	12-7-2025 12:39
धान्य	11-1-2026 3:39
भ्रामरी	11-9-2026 15:39
भद्रिका	12-7-2027 12:39

सिद्धि (7 वर्ष)

12-7-2027 12:39
12-7-2034 12:39

सिद्धि	20-11-2028 16:9
संकटा	11-6-2030 20:9
मंगला	21-8-2030 20:39
पिंगला	10-1-2031 21:39
धान्य	11-8-2031 23:9
भ्रामरी	22-5-2032 1:9
भद्रिका	12-5-2033 3:39
उल्का	12-7-2034 12:39

संकटा (8 वर्ष)

12-7-2034 12:39
12-7-2042 12:39

संकटा	21-4-2036 20:39
मंगला	12-7-2036 0:39
पिंगला	21-12-2036 8:39
धान्य	21-8-2037 20:39
भ्रामरी	12-7-2038 12:39
भद्रिका	22-8-2039 8:39
उल्का	21-12-2040 8:39
सिद्धि	12-7-2042 12:39

मंगला (1 वर्ष)

12-7-2042 12:39
12-7-2043 12:39

मंगला	22-7-2042 16:9
पिंगला	11-8-2042 23:9
धान्य	11-9-2042 9:39
भ्रामरी	21-10-2042 23:39
भद्रिका	11-12-2042 17:9
उल्का	10-2-2043 14:9
सिद्धि	22-4-2043 14:39
संकटा	12-7-2043 12:39

पिंगला (2 वर्ष)

12-7-2043 12:39
12-7-2045 12:39

पिंगला	22-8-2043 2:39
धान्य	21-10-2043 23:39
भ्रामरी	11-1-2044 3:39
भद्रिका	21-4-2044 14:39
उल्का	21-8-2044 8:39
सिद्धि	10-1-2045 9:39
संकटा	21-6-2045 17:39
मंगला	12-7-2045 12:39

धान्य (3 वर्ष)

12-7-2045 12:39
12-7-2048 12:39

धान्य	11-10-2045 20:9
भ्रामरी	10-2-2046 14:9
भद्रिका	12-7-2046 18:39
उल्का	11-1-2047 9:39
सिद्धि	12-8-2047 11:9
संकटा	11-4-2048 23:9
मंगला	12-5-2048 9:39
पिंगला	12-7-2048 12:39

योगिनी दशा - II

भ्रामरी (4 वर्ष)

12-7-2048 12:39
12-7-2052 12:39

भ्रामरी	21-12-2048 20:39
भद्रिका	12-7-2049 18:39
उल्का	13-3-2050 6:39
सिद्धि	22-12-2050 8:39
संकटा	12-11-2051 0:39
मंगला	22-12-2051 14:39
पिंगला	12-3-2052 18:39
धान्य	12-7-2052 12:39

भद्रिका (5 वर्ष)

12-7-2052 12:39
12-7-2057 12:39

भद्रिका	23-3-2053 4:9
उल्का	21-1-2054 13:9
सिद्धि	11-1-2055 15:39
संकटा	21-2-2056 11:39
मंगला	12-4-2056 5:9
पिंगला	22-7-2056 16:9
धान्य	21-12-2056 20:39
भ्रामरी	12-7-2057 12:39

उल्का (6 वर्ष)

12-7-2057 12:39
12-7-2063 12:39

उल्का	12-7-2058 18:39
सिद्धि	11-9-2059 21:39
संकटा	10-1-2061 21:39
मंगला	12-3-2061 18:39
पिंगला	12-7-2061 12:39
धान्य	11-1-2062 3:39
भ्रामरी	11-9-2062 15:39
भद्रिका	12-7-2063 12:39

सिद्धि (7 वर्ष)

12-7-2063 12:39
12-7-2070 12:39

सिद्धि	20-11-2064 16:9
संकटा	11-6-2066 20:9
मंगला	21-8-2066 20:39
पिंगला	10-1-2067 21:39
धान्य	11-8-2067 23:9
भ्रामरी	22-5-2068 1:9
भद्रिका	12-5-2069 3:39
उल्का	12-7-2070 12:39

संकटा (8 वर्ष)

12-7-2070 12:39
12-7-2078 12:39

संकटा	21-4-2072 20:39
मंगला	12-7-2072 0:39
पिंगला	21-12-2072 8:39
धान्य	21-8-2073 20:39
भ्रामरी	12-7-2074 12:39
भद्रिका	22-8-2075 8:39
उल्का	21-12-2076 8:39
सिद्धि	12-7-2078 12:39

मंगला (1 वर्ष)

12-7-2078 12:39
12-7-2079 12:39

मंगला	22-7-2078 16:9
पिंगला	11-8-2078 23:9
धान्य	11-9-2078 9:39
भ्रामरी	21-10-2078 23:39
भद्रिका	11-12-2078 17:9
उल्का	10-2-2079 14:9
सिद्धि	22-4-2079 14:39
संकटा	12-7-2079 12:39

योगिनी दशा - III

पिंगला (2 वर्ष)

12-7-2079 12:39
12-7-2081 12:39

पिंगला	22-8-2079 2:39
धान्य	21-10-2079 23:39
भ्रामरी	11-1-2080 3:39
भद्रिका	21-4-2080 14:39
उल्का	21-8-2080 8:39
सिद्धि	10-1-2081 9:39
संकटा	21-6-2081 17:39
मंगला	12-7-2081 12:39

धान्य (3 वर्ष)

12-7-2081 12:39
12-7-2084 12:39

धान्य	11-10-2081 20:9
भ्रामरी	10-2-2082 14:9
भद्रिका	12-7-2082 18:39
उल्का	11-1-2083 9:39
सिद्धि	12-8-2083 11:9
संकटा	11-4-2084 23:9
मंगला	12-5-2084 9:39
पिंगला	12-7-2084 12:39

भ्रामरी (4 वर्ष)

12-7-2084 12:39
12-7-2088 12:39

भ्रामरी	21-12-2084 20:39
भद्रिका	12-7-2085 18:39
उल्का	13-3-2086 6:39
सिद्धि	22-12-2086 8:39
संकटा	12-11-2087 0:39
मंगला	22-12-2087 14:39
पिंगला	12-3-2088 18:39
धान्य	12-7-2088 12:39

भद्रिका (5 वर्ष)

12-7-2088 12:39
12-7-2093 12:39

भद्रिका	23-3-2089 4:9
उल्का	21-1-2090 13:9
सिद्धि	11-1-2091 15:39
संकटा	21-2-2092 11:39
मंगला	12-4-2092 5:9
पिंगला	22-7-2092 16:9
धान्य	21-12-2092 20:39
भ्रामरी	12-7-2093 12:39

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

शुभाशुभ अंक

9	3	2
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	https://pdf.astrologyapi.com/v1/basic_horoscope_pdf
जन्म दिनांक	12-6-2025
मूलांक	3
मूलांक स्वामी	गुरु
मित्र अंक	7,5,6,9
सम अंक	1,2
शत्रु अंक	4,8
शुभ दिन	मंगलवार, गुरूवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	पीला नीलम
शुभ उपरत्न	पुखराज, पीला तुरमली
शुभ देवता	विष्णु
शुभ धातु	सोना
शुभ रंग	पीला
शुभ मंत्र	|| ओम ह्रिंग गुरवे नमः ||

आपके बारे में

आपका मूलांक तीन हैं । मूलांक तीन का स्वामी गुरु है । गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगे तथा अपने अधीनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगे । काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगे । इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी । गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर क कार्य तथा धर्म - कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होंगे तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगे और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देते रहेंगे। दान - पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगे। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसंद करेंगे। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगे। स्वभाव से आप शांत, कोमल, ह्रदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगे। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुए कष्टों को भी सहन करेंगे एवं अंत में विजयश्री को प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा | लेकिन कभी - कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदार विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

आपके के लिए शुभ समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। गुरु गायत्री मंत्र - ||ॐ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः

प्रचोदयात्त।|

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में अनुदित रूप में कालसर्प दोष विद्यमान है।

आपको कुंडली में कालसर्प दोष आंशिक रूप से विद्यमान है।

कालसर्प नाम

महापद्म

दिशा

आंशिक अनुदित

कालसर्प दोष का प्रभाव

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में महापद्म नामक कालसर्प योग बन रहा है।
राहु छठे भाव में और केतु बारहवे भाव में और इसके बीच सारे ग्रह अवस्थित हों तो महापद्म कालसर्प योग बनता है। इस योग में जातक शत्रु विजेता होता है, विदेशों से व्यापार में लाभ कमाता है लेकिन बाहर ज्यादा रहने के कारण उसके घर में शांति का अभाव रहता है। इस योग के जातक को एक ही चिज मिल सकती है धन या सुख। इस योग के कारण जातक यात्रा बहुत करता है उसे यात्राओं में सफलता भी मिलती है परन्तु कई बार अपनो द्वारा धोखा खाने के कारण उनके मन में निराशा की भावना जागृत हो उठती है एवं वह अपने मन में शत्रुता पालकर रखने वाला भी होता है। जातक का चरित्र भी बहुत संदेहास्पद हो जाता है। उसके धर्म की हानि होती है। वह समय-समय पर बुरा स्वप्नदेखता है।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	24.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

शनि सप्तम भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

द्वादश भाव में मंगल अवस्थित है।

केतु आपके कुंडली में द्वादश भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

केतु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

राहु की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को राहु देख रहा है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव शनि से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	11-7-2025
शनि राशि	मीन
चंद्र राशि	धनु
वक्री शनि	नहीं

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

पन्ना

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

नीलम

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

हीरा

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

जीवन रत्न - पन्ना

विकल्प	हरा गोमेद	दिन	बुधवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	बुद्ध
भार	4 - 6.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है । पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है । यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी नज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है ।

भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पन्ना रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें ।

विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित नील), पेरिडोट, हरा जिक्रोन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न - नीलम

विकल्प	नीली	दिन	शनिवार
उंगली	मध्यमिका	अधिदेवता	शनि
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है । नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है ।

भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए । इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूंगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न - हीरा

विकल्प	ओपल / जिरकॉन	**दिन**	शुक्रवार
उंगली	कनिष्ठा	**अधिदेवता**	शुक्र
भार	1 - 4.25 कैरेट	**धातु**	चांदी

विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है । हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, निर्मलता की प्राप्ति होती है । हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।

भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए । इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद नीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया सकता है ।

सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूंगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

लग्न फल - कन्या

स्वामी	बुध
प्रतीक	कन्या
विशेषताएँ	पृथ्वी तत्त्व, द्विस्वभाव, दक्षिण
भाग्यशाली रत्न	हीरा
व्रत का दिन	शुक्रवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

कन्या लग्न के व्यक्ति व्यावहारिक, विश्लेषणात्मक, भेदभाव करने वाले ,तुनुकमिज़ाज शांत, , शर्मीले , गंभीर, विचारशील,सख्त,सतर्क,विनयशील,जानकारी के लिए चौकस, और कुछ हद तक आत्म केन्द्रित होते हैं।

आप एक, सरल सक्रिय और सतर्क दिमाग के मालिक हैं । ज्ञान पाना और उसका अच्छे कार्यों में उपयोग करना आप के लिए महत्वपूर्ण हैं। आप जीवन में पूर्णता पाने के लिए सतत प्रयास करते हैं और जीवन में आपने अपने आदर्श और मापदंड इतनी ऊंचे स्थापित किये हुए हैं कि,हर कोई आपके साथ या आसपास रहना चाहता है।

> " लेकिन कई बार दूसरे उन उच्च आदर्शों के लिए पर्याप्त 'अच्छे ' नहीं हो सकते । आपके भीतर यह विशेष योग्यता है कि कहाँ क्या गलत है यह आप पता लगा लेते हैं ।

कभी कभी, हालांकि, आप जिन्हे प्यार करते हैं ,उनके ऊपर और उनकी गतिविधियों पर आपकी आलोचनात्मक दृष्टि अक्सर संबंधों में खटास पैदा कर सकती हैं। आपको निराशावाद औरस्वयं की अत्यधिक आलोचना, अपने इन दो दोषों में सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए।आप की प्रवृत्ति विशेष रूप से छोटे क्रिया-कलापों और छोटे छोटे विवरण के बारे में बहुत ज्यादा चिंता करने की हो सकती है।

बहुत ज्यादा चिंता स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकती है। आप को हर अनुभव को पचाने और कड़वाहट,

अफसोस, द्वेष या असंतोष के बिना इसे आत्मसात करना, सीखने की जरूरत है। अयोग्यता की भावना द्वारा उपजी अपने अन्दर की नकारात्मकता से आपको छुटकारा पाने की ज़रूरत है। आप अपनी उम्र से हमेशा छोटे लगते हैं,भले ही आप कितने बडे हों ।

आप बहुत बेचैन और परेशान होते हैं, क्योंकि आप पर कभी कभी जीवन का बोझ अधिक हो जाता है। कई बार आप बहुत दुविधा में और अनिश्चित हो सकते है ।

> " कन्या लग्न का स्वामी बुध है इसलिए बुध आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

सेवाभाव

सकारात्मक लक्षण

मेधावी | विश्लेषणात्मक | अच्छी स्मृति | समर्पित

नकारात्मक लक्षण

आत्मविश्वास की कमी | स्वार्थपरायण | चिंतित | अतिपेक्षित